ग्रामीण जीवन में जनसंख्या का प्रभाव

दीपक कुमार
शोधछात्र, समाजशास्त्र विभाग, माधव कालेज, ग्वालियर सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म0प्र0)

सारांश

भारत गाँवों का देश है जहाँ से हमारी संस्कृति एवं समाज का उदय होता है। जहाँ ग्रामीण क्षेत्र बहुत पिछड़ा हुआ माना जाता था वहीं जनसंचार माध्यम ने गाँवों को शहर से जोड़ने का कार्य किया एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहने वालों लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधारने में पूर्णरूपेण भूमिका निभा रही है। जनसंचार के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में भी लोग शिक्षित होने के साथ अपने सामाजिक–आर्थिक स्थिति को काफी हद तक सुधार लाने में सशक्त हुये है। संचार माध्यम को गाँवों ई–विद्यालय मान लिया जाय तो गलत भी नहीं होगा। जहाँ ग्रामीण क्षेत्र के लोग सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं से अनभिज्ञ थे वहीं जनसंचार माध्यम ने इन्हें जागरूक कर इनके जीवन में एक नया आयाम प्रदान किया है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
दीपक कुमार, ''*ग्रामीण जीवन में जनसंख्या का प्रभाव*''
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 70–76
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No.12 (SM 450)

प्रस्तावना

जनसंचार का प्राचीन काल से उपयोग किया जा रहा है, लेकिन 20वीं सदी में जाकर यह अपने व्यापक एवं व्यावसायिक रूप में आया। आज वैश्वीकरण एवं खुलापन का दौर है। इसमें असीमित प्रतियोगिता है। कोई भी कम्पनी अपना उत्पादन, विश्व में न ही सस्ता और लाभदायक हो, कर सकती है। नोकिया इसका एक उदाहरण है। यह फिनलैण्ड की कम्पनी है और विश्व में चारों तरफ इसके उत्पादक या असेम्बलिंग इकाई है। इस प्रकार हर कम्पनी अपने उत्पादों को अधिक से अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचाना चाहती है। यह कार्य लोकसम्पर्क के द्वारा आसानी से हो सकता है।

वर्तमान समय में जनसंचार का सरकार, धार्मिक संस्था कारपोरेट संगठन, सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, शिक्षण संस्थान, स्थानीय निकाय, गैर–सरकारी स्वयं सेवी संस्था सभी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके बिना ये संस्था प्रभावी नहीं हो सकती। यहाँ तक की आतंकवादी संगठन एवं तानाशाहों के लिए भी जनसंचार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लोकतन्त्र में तो "जनता का, जनता के लिए, जनता का शासन होता है।" अतः लोकतन्त्र तो जनमत और आम सहमति पर आधारित है। यह जनसंचार के अभाव में नहीं हो सकता। जनसंचार के विविध पहलू है क्योंकि यह समाज से गहरे रूप से जुड़ा है। आज समाज की कोई ऐसी गतिविधि नहीं है, जहाँ जनसंचार का प्रभाव न हो। अतः हम यहाँ इसके महत्व के सभी पक्षों को नहीं बता सकते, परन्तु कुछ बिन्दुओं के अन्दर इसकी चर्चा कर सकते है। सरकार में जनसंचार का महत्व – सरकार की जनसंचार के दृष्टि से दो रूप है– 1. लोकतान्त्रिक, 2. तानाशाही। यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से इसमें कई प्रकार होते है। प्रथम रूप, लोकतन्त्र या लोक सहमति पर आधारित होती है। अतः इसमें जनसंचार का व्यापक महत्व होता है। इसके लिए जनसंचार प्राणवायु के समान होता है। पं0 जवाहर लाल नेहरू का कथन है कि– "सरकार की ओर से सूचनाओं के युक्त व अविरल प्रवाह से ही लोकतन्त्र को सफलतापूर्वक संचालित किया जा सकता है।"

शासन का एक दूसरा रूप तानाशाही होता है। इसमें भी जनसंचार का अपना महत्व है। यद्यपि तानाशाही में सूचनाओं के स्वच्छन्द प्रसार पर रोक होता है, परन्तु कुछ प्रकार की सूचनाओं पर प्रतिबन्ध नहीं होता है। ये सूचनाएं सरकार के पक्ष या प्रचार में होती है। तानाशाह को भी लोगों को अपनी तरह से शिक्षित करना होता है। सिर्फ सरकारी मत को ही जनता तक पहुँचने दिया जाता है। जैसे पाकिस्तानी तानाशाह मुशर्रफ कहते हैं कि उनका शासन ही वास्तविक लोकतन्त्र है। बेनजीर और शरीफ राष्ट्र के प्रति बेइमान है। नेपाल नरेश ने लोकतान्त्रिक सरकार को हटा दिया और बताया कि उनका उद्देश्य नेपाल की जनता का कल्याण है। इस प्रकार तानाशाही शासन में भी अपने तरह के जनसंचार की आवश्यकता होती है। इसके बिना तानाशाह एक दिन भी नहीं रह सकता।

सरकार किसी प्रकार की हो उसके रोजमर्रा के कार्यों में भी जनसंचार की आवश्यकता होती है। इसके बिना शासन कार्य नहीं चल सकता है। भारत सरकार ने 1947 में स्वतन्त्र के बाद

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की स्थापना की। यह सूचना एवं जनसंचार के क्षेत्र में उठाया गया एक क्रान्तिकारी कदम था। सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय ने लोकसम्पर्क के एक विशाल तंत्र को विकसित किया। हिन्दी, अंग्रेजी के साथ संविधान में स्वीकृत समस्त क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम में सम्पूर्ण भारतवर्ष में कार्य करता है। सरकार की 1991–92 की वार्षिक रिपोर्ट में इस मंत्रालय के उद्देश्य को रेखांकित किया गया है–

"जनता को स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन प्रदान करना, साथ ही सरकार की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना, जन–जागरण हेतु वातावरण का निर्माण करना।"

संचार माध्यम या संचार वैचारिक क्रान्ति को जन्म देने के साथ–साथ समाज के नव निर्माण, विसंगतियों के समाधान और सामाजिक बुराईयों के निराकरण में सहायक रहे हैं।[1]

मनुष्य पूर्व की स्मृति एवं उसके उदार स्थिर आकांक्षा का प्रतिफल है जो अच्छे जीवन के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है। जैसे–जैसे विश्व प्रगति कर रहा है संचार का दायित्व जटिल और गूढ़ होता जा रहा है। मानवता उदारवाद को अभाव, दरिद्रता, उत्पीड़न तथा भय से मुक्त कराता है और एक समुदाय में बांधता है। बन्धुत्व सामाजिक सुदृढ़ता तथा आपसी समझ संचार का दायित्व है।[2]

समाज को बदलना ही संचार का उत्तरदायित्व है। महादेवी वर्मा ने संचार की उपयोगिता को समझाते हुए अपनी भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है, ''संचार एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असम्भव है। अतः संचारकर्त्ताओं को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।''[3]

संचार माध्यम राष्ट्रीय विकास में तीन तरह से सहायक हो सकते हैं। उनका पहला काम है, जनता को राष्ट्रीय विकास की सूचना देना। लोगों का ध्यान 'परिवर्तन' की आवश्यकता पर केन्द्रित करना। परिवर्तन के अवसरों और माध्यमों के बारे में बताना और कुछ हद तक लोगों की इच्छाओं आकांक्षाओं को बढ़ावा देना।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि, ''किसी भी राज्य या लोकतांत्रिक देश में यदि वह विकसित है या जनकल्याणकारी विकास योजनाओं की ओर अग्रसर है तो जन और प्रशासन के कार्य कर रहे लोगों के मध्य सभी अवरोध समाप्त हो जाने चाहिए और यह कार्य केवल संचार माध्यमों द्वारा ही सम्भव है।''[4]

संचार माध्यमों का दूसरा काम लोगों को इस बात के लिए तैयार करना कि वे 'विकास की प्रक्रिया' में सहभागी बन सकें। आवश्यकता के अनुरूप निर्णयों को प्रभावित कर सकें। यह तभी सम्भव है जब शासक और शासित के बीच विचारों का सीधा आदान–प्रदान हो, परिवर्तन के मुद्दे और लक्ष्य स्पष्ट हों तथा विकल्पों के बारें में पूरी जानकारी हो। संक्षेप में सूचना का बहाव दो तरफा हो। जन संचार माध्यमों का तीसरा काम लोगों को विकास के लिए आवश्यक तकनीक

सिखाना है। साक्षरता, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और कृषि सम्बन्धी आधुनिक जानकारी से यह सम्भव है।[5]

किसी भी समाज की उन्नति एवं विकास उस समाज में रह रहे लोगों के विकास एवं प्रगति पर निर्भर करता है। लोगों की व्यक्तिगत प्रगति से ही राष्ट्र की प्रगति होती है। चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कषतिक हो या अन्य। इस प्रगति के कई कारक होते हैं। इसमें संचार का योगदान अति विशिष्ट है। लोकतांत्रिक देश में इसकी महत्वा और भी बढ़ जाती है। इसीलिए तो भारत जैसे देश में संचार माध्यमों को चौथे स्तम्भ की संज्ञा दी जाती है। प्रसिद्ध समाज शास्त्री विल्वर श्रम का यह मत है कि ''संचार माध्यम गुणात्मक परिवर्तन की भूमिका निभाते हैं।''[6]

राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति में संचार माध्यमों की भूमिका अहम् है कि देश संगठित रहे हैं, राष्ट्र की जनता सुख और शान्ति, समृद्धि और विकास मार्ग पर लगातार आगे बढ़ता जा रहा है। संचार माध्यम समाज, जीवन एवं राष्ट्र को इतना जागरूक करता है कि किसी भी समस्या का सभी लोग मिलकर साहसपूर्वक मुकाबला कर सकें, देश को किसी का मोहताज न होना पड़े।[7]

बदलते भूमण्डलीय सामाजिक परिवेश में प्रसारण सामाजिक परिवेश में महत्वपूर्ण भूमिका ही अपने आने वाले भविष्य में नए समाज की संरचना का मूलभूत आधार बनाएगी। अब इसमें कोई दो राय नहीं होना चाहिए कि संचार माध्यम जनमत के प्रभावीकरण व विकास को एक नई दिशा दी है, जिसका स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। संचार माध्यम आदि काल से ही समाज को नई दिशा देते आ रहे हैं और भविष्य में या अनादि काल तक देते रहेंगे इस बात को नकारा नहीं जा सकता।

विकास की खुशबू को गांव–गांव तक पहुँचाने के लक्ष्य से भारत सरकार ने बड़े–बड़े मंत्रालयों जैसे कृषि, रेल, समाज कल्याण आदि में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन अनवरत चल रहा है। प्रकाशन विभाग के डा0 श्याम सिंह शशि का मानना है कि भारत सरकार ने सभी महत्वपूर्ण विभागों के गतिविधियों की जानकारी जन साधारण तक पहुँचाने के लिए बहुत सी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहा है जो हर दृष्टि से आम आदमी को सूचनाओं से लैश करने में सफल सिद्ध हो रही हैं।[8]

जनसंचार के अत्याधुनिक साधन ग्रामीण समाज के प्रमुख निर्वाहक है। ये दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक तत्काल सूचनाएँ पहुँचा रहे हैं। इस क्रम में राष्ट्र–राज्य की सीमाएँ गौड़ हो गयी है। विश्व एक ग्राम बन गया है। सूचना औद्योगिकी का विश्व स्तर पर एकीकरण हुआ है। इसके अधिकाधिक प्रयोग से विशेष रूप से इन्टरनेट के तीव्र विस्तार के फलस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में मानव गतिविधियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। इसका प्रभाव ग्रामीण समाज, अर्थव्यवस्थाओं, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था एवं प्रशासनिक आदि समस्त व्यवस्थाओं पर व्यापक रूप से पड़ा है। व्यापारिक तथा वाणिज्यिक गतिविधियों में एक नयी संचार सूचना प्रौद्योगिकी ने उल्लेखनीय विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।[9]

जनसंचार का समाज के हर क्षेत्र में महत्व है। हर सामाजिक एवं संगठित गतिविधियों में जनसंचार का कुछ न कुछ महत्व है। इसके महत्व या उपयोगिता का निरन्तर विकास हो रहा है। निजी क्षेत्र के उद्यमी का उद्देष्य लाभ को अधिकतम करना होता है। इसके लिए आक्रामक जनसंचार और विपणन आवष्यक होता है पेप्सी और कोकोकोला इसका उदाहरण है। निजी क्षेत्र की संरचना काफी जटिल होती है, अतः विभिन्न हितधारकों; जैसे पूँजीपति, शेयरधारक, कर्मचारी, अधिकारी, उपभोक्ता, डीलर आदि के बीच समन्वय एवं जानकारी के आदान–प्रदान के लिए जनसंचार आवश्यक है। आज निजी कम्पनियाँ शेयर बाजार पर निर्भर हैं। वहीं से पूँजी प्राप्त करती हैं। इसलिए छवि का विशेष महत्व है। इसके अभाव में साख खत्म हो सकती है। वर्तमान में निजी कम्पनियों से भी कुछ सामाजिक एवं मानवीय पहलुओं पर योगदान की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। जनसंचार के द्वारा ही कम्पनी के मानवीय चेहरे को उजागर किया जा सकता है। इस प्रकार जनसंचार के अभाव में निजी क्षेत्र कमजोर हो जायेगा।

वर्तमान में विकसित एवं विकासशील दोनों तरह के देशों में सामाजिक कुरीतियों, अविकास, प्रदूषण, मानवाधिकार जागरूकता आदि के लिए गैर–सरकारी संगठनों के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है। प्रत्येक गैर–सरकारी संगठन का अपना एक कार्यक्षेत्र होता है। उस क्षेत्र में कार्य के बारे में लोगों को बताना पड़ता है। उसे अनुदान, चन्दा एवं लोगों के सहयोग की आवश्यकता होती है। यह जनसंचार के अभाव में नहीं हो सकता।

सहकारी एवं स्वयं सहायता समुह को भी जनसंचार की आवश्यकता है। चिकित्सा, शिक्षा, नगर निकाय, स्थानीय निकाय, जनप्रतिनिधियों के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज आतंकवादी संगठन अपना सन्देश पहुँचाने एवं छवि निर्माण में इसका खुलकर प्रयोग कर रहे हैं। ओसमा बिन लादेन इसका अच्छा उदाहरण है। राजनीतिक दलों के लिए तो यह प्राणवायु के समान है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि समाज की हर गतिविधि में इसका एक विशेष महत्व है। वर्तमान में कोई क्षेत्र इससे अछुता नहीं है।

जनसंचार की अनोखी विशेषता है कि वह इस तरह की सेवाओं और सुविधाओं के उपयोग के मामले में शहरी–ग्रामीण इलाकों में मूलभूत संरचना की उपलब्धता से सम्बन्धित अंतर को पाटने में सक्षम है। जनसंचार साक्षरता और भाशा की बाधा को भी खत्म कर सकती है। यह सरकार और आम आदमी के बीच दोतरफा संचार चैनल के रुप में काम करती है। यह ग्रामीण इलाकों में रहने वाली जनता की को बाजार की जानकारी और सुविधा देकर उन्हें सशक्त बना सकती है। ग्रामीण आबादी को मुख्यधारा से जोड़ने से दूर–दराज की जनता भी देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में भागीदारी सुनिष्चित होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंचार के विकास के लिए निजी और सरकारी दोनों ओर से पहल की गई है।[10]

मीडिया केवल समाज का आईना ही नहीं है बल्कि यह राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व सामाजिक बदलाव का एक साधन है। यह सामाजिक बुराईयों, भेद–भाव, अस[11]मानता, रंग, जाति, लिंग और अहिंसा के अन्य स्रोत के उन्मूलन में मदद करता है। इन दिनों महिलाएँ और

मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

मीडिया ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को जागरूक करने में लगभग विफल रहा है। इसमें माध्यमों तक पहुँच को भी कारण माना जा सकता है। अशिक्षा या माध्यम की अनुपलब्धता तो इसका एक कारण है ही। शहरी परिवेश की महिलाओं के पास माध्यमों की उपलब्धता है परन्तु माध्यमों द्वारा महिलाओं से जुड़े विषयों को कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती। माध्यमों की विषय सामग्री में प्राथमिकता या तो राजनीति से जुड़े मुद्दों को दी जाती है या फिर मनोरंजन। टी.वी. इन्टरनेट, रेडियों और अन्य माध्यम उन तक जानकारी पहुँचाने में असफल रहे है। बहरहाल जनसंचार माध्यमों की विषय सामग्री में महिलाओं से जुड़े मुद्दों को ज्यादा तवोज्जोह देने की आवश्यकता है। नारी शोषण उन्मूलन हेतु निर्मित कानूनों और प्रावधानों के प्रति जागरूकता फैलाने में मीडिया की महत्त्वपूर्ण भागीदारी हो सकती है।

जनसंचार ने गाँव के विकास को एक आयाम प्रदान किए है। जनसंचार का उद्देश्य ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को इंगित कर ग्राम के विकास में सहायता प्रदान करना है। परिवार और जनकल्याण, साक्षरता, कृषि की उन्नत विधियाँ, महिला एवं बाल विकास की स्थितियों का आकलन, नवीन योजनाओं की जानकारी व गाँवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना इनमें शामिल है। महत्त्वपूर्ण यह है कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और पूरे देश को खाद्यान्न की आपूर्ति गाँवों से होती है। अतः जनसंचार न केवल गाँवों के विकास में मदद करता है बल्कि गाँव व शहरों के पारस्परिक सम्बन्धों पर सेतु का कार्य करता है।

जनसंचार की व्यवस्था को और अधिक व्यवस्थित तरीके से ग्रामीण क्षेत्र के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाया जाये, तो देश का और अधिक तीव्रगति से विकास होगा। जनसंचार का स्वरूप, आकार, आदि को देखकर प्रतीत होता है कि देश के प्रत्येक क्षेत्रों में किसी न किसी माध्यम से प्रयोग हो रहा है अर्थात् जनसंचार के माध्यम से देश व ग्रामीण जीवनस्तर पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है।

ग्रामीण विकास के संदर्भ में जन संचार माध्यमों के उपयोग के सम्बन्ध में शोध एवं अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि ग्रामीणों को विकास के मुद्दों के प्रति जागरुक करने के लिए केवल एक जनसंचार का माध्यम पर्याप्त नहीं होता है। एक से अधिक जनसंचार माध्यमों का उपयोग विकास संचार के लिए अधिक प्रभावशाली होता है। आजकल ग्रामीण विकास के लिए मीडिया प्लानिंग करते समय ''मीडिया मिक्स'' एप्रोच के अन्तर्गत एक से अधिक जनसंचार माध्यमों का उपयोग किया जाता है। भारत सरकार के फ्लैग शिप कार्यक्रमों ''सर्वशिक्षा अभियान, मिड डे मील स्कीम, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन इत्यादि की जानकारी ग्रामीण जनता को देने के लिए विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (डी.ए.वी.पी.) उपरोक्त विषयों के विज्ञापन ''मीडिया मिक्स'' एप्रोच के अन्तर्गत समाचार पत्रों, रेडियों एवं टेलीविजन में एक साथ देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] *गौतम, सुरेश एवं गौतम, वीणा (2001); हिन्दी पत्रकारिता कल, आज और कल; पृ0 79*

[2] *विलानिलम, जे.वी. (2002); भारत में संचार और जनसंचार; पृ0 06*

[3] *पंत, नवीन चंद (2001); पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त; पृ0 189*

[4] *रत्तू, के.के. (2001); सूचना तंत्र एवं प्रसारण माध्यम; पृ0 32*

[5] *गुप्त, बृजमोहन (1992); जनसंचार : विविध आयाम; पृ0 07–08*

[6] *सिंह, ध्रुव भूषण (जनवरी 2006); कुरूक्षेत्र– ग्रामीण समाज और संचार माध्यम; पृ0 40*

[7] *धर्मवीर (1999); राजनीतिक समाजशास्त्र; पृ0 238*

[8] *शर्मा, राधेश्याम (1999); विकास पत्रकारिता; पृ0 68*

[9] *गौतम, डॉ0 मनोज कुमार (2013). ग्रामीण अंचल में जनसंचार का स्वरूप An International Multidisciplinary Refereed Research Jounral, Publisher : Herambh Welfare Society, Varanasi, ISSN : 2322-0317*

[10] *आर. चन्द्रंशेखर, ग्रामीण समुदाय के जीवन को बेहतर बनाने के लिए आईसीटी के जरिए गांव और शहर के बीच की दूरियों को मिटाना, Online www.google.com*